

गिजूभाई बधेका के दृष्टिकोण से पर्यावरण शिक्षा का महत्व

नीता सिंह

शोध छात्रा

संदीपनी एकेडमी, पेंडी, मस्तुरी, बिलासपुर

रीता सिंह

प्राचार्य

संदीपनी एकेडमी, पेंडी, मस्तुरी, बिलासपुर

सारांश

गिजूभाई बधेका ने बाल-केंद्रित और अनुभवात्मक अधिगम पर बल दिया, जिसमें प्रकृति ने एक महत्वपूर्ण शैक्षिक भूमिका निभाई। यह शोधपत्र गिजूभाई के शैक्षिक दृष्टिकोण से पर्यावरण शिक्षा के महत्व का विश्लेषण करता है। उनका मानना था कि बच्चे अपने परिवेश के साथ प्रत्यक्ष संपर्क, प्रकृति के अवलोकन, गतिविधि-आधारित अनुभवों और खेल के माध्यम से सर्वोत्तम रूप से सीखते हैं। उनके दर्शन के अनुसार, पर्यावरण शिक्षा को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि इससे जिज्ञासा, रचनात्मकता, नैतिक मूल्यों और प्राकृतिक जगत के प्रति भावनात्मक संवेदनशीलता का विकास होना चाहिए। यह शोधपत्र अधिगम के आधार के रूप में प्रकृति पर उनके विचारों, पर्यावरण जागरूकता में गतिविधि और खेल की भूमिका, और पारिस्थितिक शिक्षा के नैतिक और सामाजिक आयामों पर चर्चा करता है। यह बच्चों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार विकसित करने में माता-पिता और शिक्षकों की जिम्मेदारियों पर भी प्रकाश डालता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने और टिकाऊ, मूल्य-आधारित और प्रकृति-अनुकूल शिक्षा प्रणालियों को बढ़ावा देने में गिजूभाई के शैक्षिक विचार अत्यंत प्रासंगिक बने हुए हैं।

1 प्रस्तावना

गिजूभाई बधेका भारत के सबसे प्रभावशाली शिक्षा सुधारकों में से एक थे, जिन्होंने बाल-केंद्रित, गतिविधि-आधारित और अनुभवात्मक शिक्षा की वकालत की। यद्यपि उन्होंने "पर्यावरण शिक्षा" नामक कोई अलग सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किया, फिर भी उनके शैक्षिक दर्शन में बच्चों और उनके प्राकृतिक परिवेश के बीच संबंध पर विशेष बल दिया गया। उनका मानना था कि सच्ची शिक्षा कक्षा की चारदीवारी के भीतर रटने के बजाय प्रकृति, समाज और रोजमर्रा के अनुभवों के साथ प्रत्यक्ष अंतःक्रिया के माध्यम से होती है।

गिजूभाई प्रकृति को एक सजीव शिक्षक मानते थे जो बच्चों में जिज्ञासा, संवेदनशीलता, अनुशासन, रचनात्मकता और नैतिक चेतना विकसित करने में सक्षम है। उनके अनुसार, शिक्षा को बच्चों को उनके पर्यावरण से अलग नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें अपने आसपास की प्राकृतिक दुनिया को समझने और उसकी सराहना करने में मदद करनी चाहिए। उन्होंने बाहरी शिक्षा, अवलोकन, खेल, कहानी सुनाना और व्यावहारिक अनुभवों को महत्वपूर्ण शैक्षिक उपकरण बताया। उनका दर्शन मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य को दर्शाता था और सादगीपूर्ण जीवन, सामाजिक जिम्मेदारी और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देता था।

जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण क्षरण, प्रदूषण और पारिस्थितिक असंतुलन के इस वर्तमान युग में, गिजूभाई के शैक्षिक विचारों का महत्व और भी बढ़ गया है। पर्यावरण जागरूकता के प्रति उनका बाल-केंद्रित दृष्टिकोण पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार नागरिकों के विकास के लिए बहुमूल्य मार्गदर्शन प्रदान करता है। निम्नलिखित चर्चा में गिजूभाई बधेका के दृष्टिकोण से पर्यावरण शिक्षा के महत्व का पाँच विस्तृत खंडों के माध्यम से विश्लेषण किया गया है।

2 प्रकृति अधिगम का आधार

गिजूभाई बधेका - गिजूभाई बधेका के सर्वश्रेष्ठ विचार: उनके अनुसार, शिक्षा बच्चे के परिवेश के साथ प्रत्यक्ष अंतःक्रिया से उत्पन्न होनी चाहिए। उन्होंने उन कठोर कक्षा प्रणालियों की कड़ी आलोचना की जहाँ बच्चे दीवारों के भीतर ही सीमित रहते थे और वास्तविक दुनिया से कटे रहते थे। इसके बजाय, उन्होंने अवलोकन, अन्वेषण और प्राकृतिक परिवेश में सहभागिता के माध्यम से अधिगम पर बल दिया।

उनका मानना था कि बच्चों में पौधों, जानवरों, ऋतुओं, नदियों, पक्षियों और बदलते पर्यावरणीय परिस्थितियों के प्रति स्वाभाविक जिज्ञासा होती है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा बच्चे की प्रकृति में सहज रुचि से शुरू होती है। रटने के माध्यम से जिज्ञासा को दबाने के बजाय, शिक्षकों और अभिभावकों को बच्चों को प्रश्न पूछने और अपने परिवेश का स्वतंत्र रूप से अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

गिजूभाई के अनुसार, प्रकृति बच्चों की सभी इंद्रियों को उत्तेजित करती है और सर्वांगीण विकास में योगदान देती है। बाहरी अधिगम अवलोकन कौशल, एकाग्रता, रचनात्मकता, भावनात्मक संतुलन और वैज्ञानिक सोच विकसित करता है। एक बच्चा पौधे के विकास या कीड़ों की गति का अवलोकन करते हुए धैर्य, जिज्ञासा और जीवन के प्रति सराहना सीखता है।

उनका यह भी मानना था कि प्राकृतिक परिवेश सार्थक शैक्षिक अनुभव प्रदान करते हैं जो केवल पाठ्यपुस्तकों से प्राप्त नहीं किए जा सकते। उदाहरण के लिए, बच्चे मौसम, ऋतुओं, कृषि, जल और जैव विविधता की अवधारणाओं को रटी हुई परिभाषाओं की तुलना में प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से समझ सकते हैं। इस प्रकार प्रकृति आधारित शिक्षा व्यावहारिक, आनंददायक और दीर्घकालिक बन जाती है।

गिजूभाई ने अनुभवात्मक शिक्षा पर जोर दिया, जो आधुनिक पर्यावरण शिक्षा का आधार है। उनका मानना था कि पर्यावरण जागरूकता केवल सैद्धांतिक व्याख्याओं से विकसित नहीं की जा सकती। बच्चों को बागवानी, बाहरी गतिविधियों, प्रकृति की सैर और अवलोकन आधारित शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण से सक्रिय रूप से जुड़ना चाहिए।

उनके दर्शन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू प्रकृति के साथ भावनात्मक जुड़ाव था। उनका मानना था कि जो बच्चे पौधों, जानवरों और प्राकृतिक परिवेश के प्रति स्नेह विकसित करते हैं, उनके वयस्क होने पर पर्यावरण के प्रति अधिक जिम्मेदार व्यक्ति बनने की संभावना होती है। इसलिए, पर्यावरण शिक्षा को न केवल जानकारी प्रदान करनी चाहिए, बल्कि प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और करुणा का पोषण भी करना चाहिए।

उनके विचार समकालीन पर्यावरण शिक्षा सिद्धांतों के साथ निकटता से मेल खाते हैं जो पारिस्थितिक जागरूकता, स्थिरता और अनुभवात्मक शिक्षा पर जोर देते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली प्रौद्योगिकी और घर के अंदर रहने की जीवनशैली पर अत्यधिक निर्भरता का मुकाबला करने के लिए बच्चों को प्राकृतिक वातावरण से जोड़ने के महत्व को तेजी से पहचान रही है।

इस प्रकार, गिजूभाई प्रकृति को केवल शिक्षा की पृष्ठभूमि के रूप में नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया के एक सक्रिय और आवश्यक घटक के रूप में देखते थे।

3 गतिविधि और खेल के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा

गिजूभाई बच्चे के शैक्षिक दर्शन का एक प्रमुख सिद्धांत गतिविधि और खेल के माध्यम से सीखना था। उनका मानना था कि बच्चे निष्क्रिय रूप से जानकारी ग्रहण करने के बजाय सार्थक अनुभवों में सक्रिय रूप से भाग लेकर सबसे प्रभावी ढंग से सीखते हैं। यह सिद्धांत पर्यावरण शिक्षा के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

गिजूभाई के अनुसार, पर्यावरण की समझ स्वाभाविक रूप से तब विकसित होती है जब बच्चे अपने परिवेश से जुड़ी व्यावहारिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं। बागवानी, वृक्षारोपण, पक्षियों का अवलोकन, पतियाँ एकत्र करना, जानवरों की देखभाल करना और स्वच्छता बनाए रखना जैसी गतिविधियाँ बच्चों को आनंददायक तरीके से पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में मदद करती हैं।

उन्होंने रटने और यांत्रिक शिक्षण विधियों का कड़ा विरोध किया। पारंपरिक प्रणालियों में, पर्यावरण संबंधी विषयों को अक्सर पाठ्यपुस्तक की परिभाषाओं और परीक्षा-उन्मुख शिक्षा तक सीमित कर दिया जाता है। गिजूभाई का मानना था कि ऐसी विधियाँ भावनात्मक जुड़ाव और व्यावहारिक समझ विकसित करने में विफल रहती हैं। इसके बजाय, पर्यावरण शिक्षा में प्रत्यक्ष भागीदारी और आनंददायक अनुभव शामिल होने चाहिए।

उनके शैक्षिक दर्शन में खेल का एक महत्वपूर्ण स्थान था। बाहरी खेलों और समूह गतिविधियों के माध्यम से, बच्चे सहयोग, अनुशासन और साझा स्थानों के प्रति सम्मान सीखते हैं। खेल बच्चों को मिट्टी, पानी, सूर्य के प्रकाश और वनस्पति जैसे प्राकृतिक तत्वों के साथ घनिष्ठ रूप से संवाद करने का अवसर भी प्रदान करता है। यह संवाद पर्यावरण के प्रति परिचितता और सराहना विकसित करता है।

गिजूभाई ने प्रकृति से संबंधित रचनात्मक गतिविधियों जैसे कहानी सुनाना, गीत गाना, चित्रकारी और नाटक पर भी जोर दिया। उनका मानना था कि कलात्मक अभिव्यक्ति बच्चों को पर्यावरण से जुड़े विषयों से भावनात्मक रूप से जुड़ने में मदद करती है। जानवरों, जंगलों, नदियों और ग्रामीण जीवन से जुड़ी कहानियाँ कल्पनाशीलता और पारिस्थितिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देती हैं।

उन्होंने व्यावहारिक कार्य को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना। बच्चों को स्वच्छता बनाए रखने, पौधों की देखभाल करने और अपने परिवेश की रक्षा करने में भाग लेना चाहिए। ऐसी जिम्मेदारियाँ बचपन से ही पर्यावरण संरक्षण की आदतें विकसित करने में सहायक होती हैं।

गिजूभाई के दर्शन का एक और महत्वपूर्ण योगदान पर्यावरण शिक्षा को दैनिक जीवन से जोड़ना है। पर्यावरण शिक्षा को सामान्य अनुभवों से अलग एक विषय नहीं बनाया जाना चाहिए। इसके बजाय, बच्चों को प्रकृति और समाज के साथ दैनिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से पर्यावरणीय मूल्यों को सीखना चाहिए।

उनकी गतिविधि-आधारित शिक्षा पद्धति वैज्ञानिक सोच के विकास में भी सहायक है। जब बच्चे प्राकृतिक घटनाओं का अवलोकन करते हैं और स्वतंत्र रूप से प्रयोग करते हैं, तो वे आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक रूप से सोचना सीखते हैं। इसलिए पर्यावरण शिक्षा बौद्धिक और नैतिक विकास का साधन बन जाती है।

आजकल, आधुनिक शैक्षिक पद्धतियाँ पर्यावरण क्लबों, स्कूली उद्यानों, क्षेत्र भ्रमण और परियोजना कार्यों के माध्यम से गतिविधि-आधारित पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा दे रही हैं। ये विधियाँ उस शैक्षिक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती हैं जिसकी वकालत गिजूभाई ने दशकों पहले की थी।

इस प्रकार, गिजूभाई बच्चों में सार्थक पर्यावरण शिक्षा विकसित करने के लिए गतिविधि और खेल को आवश्यक उपकरण मानते थे।

4 पर्यावरण शिक्षा के नैतिक और सामाजिक आयाम

गिजूभाई बधेका का मानना था कि शिक्षा बच्चों के नैतिक और सामाजिक विकास में योगदान देना चाहिए। उनके दर्शन के अनुसार, पर्यावरण शिक्षा केवल प्रकृति के वैज्ञानिक ज्ञान तक सीमित नहीं है। इसमें नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और सभी प्रकार के जीवन के प्रति सम्मान का विकास भी शामिल है।

उन्होंने करुणा, सहयोग, सादगी और उत्तरदायित्व को मानवीय चरित्र के आवश्यक गुण बताया। ये मूल्य पर्यावरण चेतना से गहराई से जुड़े हुए हैं। जो बच्चा जीवित प्राणियों के प्रति सहानुभूति सीखता है, उसमें प्रकृति का सम्मान करने और पर्यावरण के प्रति विनाशकारी व्यवहार से बचने की संभावना अधिक होती है।

गिजूभाई का मानना था कि बच्चों को समाज और प्रकृति के साथ अपने संबंध को एक साथ समझना चाहिए। मनुष्य पर्यावरण से अलग नहीं है, बल्कि उस पर गहराई से निर्भर है। इसलिए, पर्यावरण शिक्षा को बच्चों को संतुलन, संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग का महत्व सिखाना चाहिए।

उनका दर्शन सादगीपूर्ण जीवन के सिद्धांत को भी प्रतिबिंबित करता था। उन्होंने अत्यधिक भौतिकवाद का विरोध किया और उनका मानना था कि सुख विलासिता और उपभोगवाद पर निर्भर नहीं करता है। यह विचार आधुनिक युग में अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ अत्यधिक उपभोग पर्यावरण के क्षरण में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

गिजूभाई के अनुसार, नैतिक शिक्षा केवल उपदेश देने के बजाय व्यावहारिक अनुभवों से विकसित होनी चाहिए। बच्चों को सामुदायिक स्वच्छता में भाग लेकर, सार्वजनिक स्थानों की देखभाल करके, जल संरक्षण करके और पेड़-पौधों और जानवरों की रक्षा करके पर्यावरणीय जिम्मेदारी सीखनी चाहिए।

वे सहयोगात्मक शिक्षा और सामूहिक जिम्मेदारी में भी विश्वास रखते थे। पर्यावरणीय समस्याएं पूरे समाज को प्रभावित करती हैं और इसलिए सामूहिक समाधान की आवश्यकता होती है। पर्यावरण संरक्षण से संबंधित सामूहिक गतिविधियां बच्चों को सामाजिक सहयोग और नागरिक जिम्मेदारी विकसित करने में मदद करती हैं।

उनके दर्शन का एक और महत्वपूर्ण पहलू ग्रामीण जीवन और स्थानीय संस्कृति के प्रति सम्मान था। गिजूभाई ने कृषि, वन, जल संरक्षण और सामुदायिक जीवन से जुड़े पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के शैक्षिक महत्व को पहचाना। इसलिए, पर्यावरण शिक्षा में स्थानीय पारिस्थितिक प्रथाओं और स्वदेशी ज्ञान के प्रति जागरूकता शामिल होनी चाहिए।

उनके विचार मनुष्य और प्रकृति के बीच शांति और सद्भाव को भी बढ़ावा देते हैं। प्रकृति के विरुद्ध हिंसा अंततः स्वयं मानव समाज को ही नुकसान पहुंचाती है। इसलिए, पर्यावरण शिक्षा को देखभाल, कृतज्ञता और पारिस्थितिक संतुलन के दृष्टिकोण को विकसित करना चाहिए।

आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता इन विचारों का दृढ़ता से समर्थन करती है। आज सतत विकास के लिए न केवल वैज्ञानिक नवाचार बल्कि नैतिक परिवर्तन भी आवश्यक है। गिजूभाई का शैक्षिक दर्शन पर्यावरणीय जिम्मेदारी की इस व्यापक समझ में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

इस प्रकार, गिजूभाई के दृष्टिकोण में पर्यावरण शिक्षा नैतिक, सामाजिक रूप से जिम्मेदार और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील व्यक्तियों के विकास का एक साधन है।

5 पर्यावरण शिक्षा में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका

गिजूभाई बधेका बच्चों के शैक्षिक विकास में अभिभावकों और शिक्षकों को प्राथमिक मार्गदर्शक मानते थे। उनके अनुसार, पर्यावरण शिक्षा तभी सफल हो सकती है जब घर और विद्यालय दोनों मिलकर पर्यावरण के प्रति जागरूक आदतें और दृष्टिकोण विकसित करने में सहयोग करें।

उनका मानना था कि माता-पिता बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं। बच्चे पर्यावरण संबंधी व्यवहार सबसे पहले पारिवारिक परिवेश में सीखते हैं। स्वच्छता, संरक्षण, पशुओं के प्रति सम्मान, पौधों की देखभाल और संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग से संबंधित आदतें घर पर ही विकसित होती हैं। इसलिए, अभिभावकों को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार का आदर्श बनना चाहिए।

गिजूभाई ने अवलोकन के माध्यम से सीखने पर विशेष बल दिया। बच्चे मौखिक निर्देशों का पालन करने की तुलना में वयस्कों के कार्यों का अधिक अनुकरण करते हैं। यदि माता-पिता पानी बर्बाद करते हैं, पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं या प्रकृति के प्रति लापरवाही भरा रवैया अपनाते हैं, तो बच्चों के भी वैसा ही व्यवहार अपनाने की संभावना रहती है। दूसरी ओर, परिवार के भीतर पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार आचरण बच्चों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

पर्यावरण जागरूकता को आकार देने में शिक्षकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। गिजूभाई का मानना था कि शिक्षकों को केवल पाठ्यपुस्तक की जानकारी देने वाले प्रशिक्षक के रूप में कार्य नहीं करना चाहिए। उन्हें जिज्ञासा जगाना चाहिए, अन्वेषण को प्रोत्साहित करना चाहिए और प्रकृति से जुड़े आनंददायक शिक्षण अनुभव प्रदान करने चाहिए।

उनके अनुसार, विद्यालयों को उद्यानों, बाहरी गतिविधियों, स्वच्छता अभियानों और अवलोकन आधारित शिक्षण के माध्यम से व्यावहारिक पर्यावरण शिक्षा के अवसर प्रदान करने चाहिए। विद्यालय का वातावरण स्वयं स्वच्छता, सहयोग और प्रकृति के प्रति सम्मान जैसे पारिस्थितिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

गिजूभाई ने शिक्षकों और अभिभावकों के बीच घनिष्ठ सहयोग को भी प्रोत्साहित किया। पर्यावरण शिक्षा तब अधिक प्रभावी होती है जब विद्यालय में अपनाए गए पर्यावरणीय मूल्यों को घर पर भी सुदृढ़ किया जाता है। ऐसा समन्वय बच्चों के सीखने के अनुभवों में निरंतरता लाता है।

उनका यह भी मानना था कि शिक्षकों में स्वयं प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता होनी चाहिए। पर्यावरण के प्रति असंवेदनशील शिक्षक बच्चों को प्रभावी ढंग से प्रेरित नहीं कर सकते। इसलिए, शिक्षक प्रशिक्षण में पर्यावरणीय मूल्यों और बाल-केंद्रित शिक्षण विधियों के प्रति जागरूकता शामिल होनी चाहिए।

उनके दर्शन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू सामुदायिक भागीदारी है। पर्यावरण संरक्षण केवल व्यक्तियों की जिम्मेदारी नहीं है। स्कूलों, परिवारों और समुदायों को पारिस्थितिक संतुलन और सार्वजनिक स्वच्छता बनाए रखने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

उनके शैक्षिक प्रयोगों ने भावनात्मक रूप से सहायक और गतिविधि-उन्मुख वातावरण बनाने के महत्व को प्रदर्शित किया, जहाँ बच्चे सहभागिता के माध्यम से स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। इसलिए पर्यावरण शिक्षा शिक्षकों, अभिभावकों और समाज की साझा जिम्मेदारी बन जाती है। आज, विश्व भर में पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम अभिभावकों की भागीदारी, अनुभवात्मक अधिगम और सामुदायिक सहभागिता पर बल देते हैं। ये दृष्टिकोण गिजूभाई के शैक्षिक दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। इस प्रकार, गिजूभाई शिक्षकों और अभिभावकों को बच्चों में पर्यावरण जागरूकता और जिम्मेदार नागरिकता विकसित करने में आवश्यक भागीदार मानते थे।

6 निष्कर्ष

गिजूभाई बधेका ने बाल-केंद्रित और अनुभवात्मक शिक्षण पद्धति के माध्यम से भारतीय शैक्षिक चिंतन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यद्यपि उन्होंने पर्यावरण शिक्षा के लिए कोई अलग औपचारिक सिद्धांत स्थापित नहीं किया, फिर भी उनके शैक्षिक दर्शन ने पारिस्थितिक जागरूकता, प्रकृति-आधारित शिक्षा, नैतिक उत्तरदायित्व और पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन के सिद्धांतों का दृढ़तापूर्वक समर्थन किया।

उनका मानना था कि बच्चे प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष संपर्क, व्यावहारिक गतिविधियों, अवलोकन और खेल के माध्यम से सबसे प्रभावी ढंग से सीखते हैं। उनके दृष्टिकोण के अनुसार, पर्यावरण शिक्षा से जिज्ञासा, रचनात्मकता, भावनात्मक संवेदनशीलता, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बच्चों को केवल प्रकृति के बारे में जानकारी ही नहीं प्राप्त करनी चाहिए, बल्कि पर्यावरण के प्रति स्नेह, सम्मान और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करनी चाहिए।

गिजूभाई ने बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूक व्यवहार को आकार देने में माता-पिता, शिक्षकों, विद्यालयों और समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिकाओं को भी मान्यता दी। अनुभवात्मक शिक्षा, सरलता, सहयोग और भावनात्मक विकास पर उनका जोर पर्यावरणीय संकटों और पारिस्थितिक असंतुलन के आधुनिक युग में अत्यंत प्रासंगिक बना हुआ है।

जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई और अस्थिर जीवनशैली जैसी आज की चुनौतियों के लिए ऐसे शैक्षिक दृष्टिकोणों की आवश्यकता है जो बचपन से ही पर्यावरणीय उत्तरदायित्व को बढ़ावा दें। गिजूभाई का शैक्षिक दर्शन इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बहुमूल्य मार्गदर्शन प्रदान करता है। उनके विचार उन शिक्षकों को प्रेरित करते रहते हैं जो सतत विकास और सामाजिक सद्भाव में योगदान देने वाले आनंदमय, मानवीय और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील शिक्षण वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं।

REFERENCES

1. Gijubhai Badheka (1931). *Divaswapna (Daydream)*. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.
2. Inflibnet Chapter on Gijubhai Badheka
3. Teachers Institute Article on Gijubhai Badheka's Educational Philosophy
4. Official Archive of Gijubhai Badheka Educational Writings